जीवन

एक अस्तित्व जब बना, जो संसार में था नया,
पर समक्ष जब आया हाँ वहीं तो है
जीवन !
नन्हा जिसे कहा, जब वो पैरों पर चला,
तुतलाना शुरू किया, हाँ वही तो है
जीवन !
लड़ना और झगड़ना, फिर कान भी पकड़ना,
घर से रहना बाहर, हाँ वही तो है,
जीवन !
अब आया एक निखार, जिन्दगी से होता प्यार,
दिन–रात हो गुलजार, हाँ वही तो है,
जीवन !
जिम्मेदारियों का एहसास, हो कर्म पर विश्वास,
जिन्दगी बने मिसाल, हाँ वही तो है,
जीवन !
आया उम्र में ठहराव, लगे दिन है और चार,
जिन्दगी की बीती शाम, हाँ वही तो है,
जीवन !
हाँ यही तो है जीवन, हाँ यही तो है,
जीवन !!

आज की नारी

नारी तेरे रूप अनेक, मौसम नहीं
तू 'जननी' है, स्थिर कर ले अपना एक
भावरूप में अनेक रूप हैं तेरे नारी,
कभी शक्ति तो कभी है दुर्गा,
कभी काली, तो जगदम्बा,
सीता भी तू, सावित्री तू ही,
कभी शालीन तो कभी प्रचण्डा।
पर नारी के रूप करें क्या,
आज जो कलियुग आया है,
उस कलियुग में नारी ने स्वर्णिम इतिहास गवांया है।
स्त्री इतनी विकट हुई, जो कभी थी, लक्ष्मी रूपा
आज अपने 'कैरियर' हेतु
हो सकती है नग्नस्वरूपा
शील और सत्य की जो थी मूरत
बना मेकअप से डरावनी सूरत
लक्ष्य को जल्दी पाने की होड़ में
रिश्ते जन्मों के लगी छोड़ने
बंधन सारे लगी तोड़ने

नारी शक्ति, नारी मोर्चा,
अबला–अबला कहते–कहते
नारी शब्द कर दिया खोखला
अपभ्रंश कर दिया रूप नारी शब्द का
है ये वर्तमान नारी का स्वरूप।

उड़ान

आज मैने एक तितली देखी,
रंगबिरंगी सुन्दर तितली,
पंख थे जैसे इन्द्रधनुषी छटा हो बिखरी
कहीं दूर से उड़ती आयी तितली।
रंग चटकीले सफेद, गुलाबी, पीला, नीला
उनपर भी अनगिनत रंगों का छीटा।
पहले एक शाख पर बैठी
झट इतरा दूसरी पर चहकी
इतने में और हुई चंचल
उसने फिर उड़ान लगाई, कहीं दूर
फिर झट हो आयी।
फिर आकर मुझसे वो बोली तितली
क्यूं छटपटाहट है तुझमें इतनी,
क्यों उदास है, क्यों चंचलता खोई
माना कि मेरे दो 'पर' है,
जो मुझे स्वतंत्र कराते हैं,
पर तेरे मन में भी तो 'उड़ान' के ख्याल आते हैं,
बोली मुझसे वो, पहचान ले खुद को
तुझमें शक्ति है, ये बात मेरी सुन,
चल आगे, मत पीछे मुड़, राह अपनी तू खुद ही चुन।

नाजुक ख्वाब

नाजुक से कॉच जैसे ख्वाब
चटखते क्यों हैं ?
ख्वाब चटखते हैं तो चटखने दो यारों
दर्द उनके टूटने का होता क्यों है ?
और जो टूट ही जाते हैं, तो याद उनकी
आती क्यों है ?
याद आती भी है ख्वाबों की तो
आने भी दे कोई,
रिश्ता ख्वाबों का, दिल ये बनाता
क्यों है ?
'वक्त' हर ज़ख्म का मरहम है, लोग
कहते हैं,
फिर 'वक्त' के निकलने का ग़म
सताता क्यों है ?

दम्भ

इन्सान का दम्भ उसे कहीं का छोड़ता नहीं,
जो दम्भी न होता मानव, तो यथार्थ से मुंह मोड़ता नहीं।
किस बात का दम्भ है ?
किस बात का है, आखिर इसे है गुमां ?
इस सत्य को खोजने की, या
सोचने की फुर्सत भी है ही कहाँ ?
क्या किया है किसी और के लिए
हाँ किया है, वजह को खत्म करके
दूसरे की, जीने के लिए।
किसी के वजूद को खत्म करना
ही क्या, एक मकसद है ?
पूछा जब तो पता चला कि
वह तो उसका 'अटल' हक है
वाह ! भाई 'हक' और
हकदार तो अब मिल ही गये
रह गये कर्म और कर्तव्यों की
दुहाई देने वाले बाशिंदे।
आज हर ओर अजीब सी मारामारी
है, लेकिन 'इनसान' बनने का
ढोंग बदस्तूर जारी है।

हकीकत

बन्द दरवाजों के पीछे सहमती कांपती हकीकत,
दीवारों की पुती उधड़ी पर्त से झांकती हकीकत,
मकानों की चारदीवारों से फांदती हकीकत,
कितनी भी कोशिश कर ले छुपाने की इन्हें लेकिन,
नम आँखों के कोरों में से कांपती हकीकत,
ख्वाबों की नरमाई को कुचलते हुए
यथार्थ के रेगिस्तान में तड़पते हुए
मृगतृष्णा के एहसास तले घिसटते हुए
प्यासी हकीकत, चीत्कार करती हकीकत।
नंगी आँखों से जलती आँखों की,
तपिश सहने की हकीकत
झूठे, मक्कार बदगुमान, नकाबपोश
चेहरे की हकीकत,
रिश्तों के पीछे छिपे स्वार्थों की नंगी हकीकत
अगर हकीकत इतनी कड़वी इतनी
जहरीली है, तब भी क्या जीने के
लिए इतनी जरूरी है
ये हकीकत !

बेटी

ओस की बूंद सी वो नन्ही सी जान
या कहें फूल की एक नन्हीं सी कली
फूल की पत्ती सा मखमली सा तन
आँखें जैसे छोटे दिये उसका
हों, टिमटिमाते हुए,
रेशमी पलकें छाता
जैसे ताने हुये
ओंठ ऐसे कि जैसे बिन बोले बोली वो
तुतलाती जुबां से जब बोले, लगे प्रकृति
के कितने छिपे रहस्य खोलती वो।
सूरज की पहली किरण सी आभा उसकी,
या कहूं चांदनी की श्वेत धवल छाया उसकी
बेटी क्या होती है, उसके कारण है जाना
तपते रेगिस्तान में ठंडक का एहसास है जैसे पाना,
ममतामयी इतनी लगे जैसे मॉ का रूप है उसमें समाया
माँ भी है, शक्ति भी वो है
बेटी होने का गर्व जो
उसने पाया।

जिन्दगी की राह

तू जिन्दगी की राह पर चलता जा,
बढ़ता जा, मत ठिठक–3
राह हैं कठिन तो क्या ? मुश्किलें
खड़ी तो क्या ?
आगे बढ़–3
कदम से कदम जो न मिलें, सुर
से सुर भी न मिलें
चल सम्हल – 3
सोचता जो तू वो मिथ्य है देखता तू वो
सत्य है,
मत झिझक–3
लेकर विश्वास को, अमूल्य तत्व ज्ञान को
जिन्दगी की नाव को
खेता चल–3
अगर जीवन एक नाव है, तू मॉझी
है मझधार का, रख भरोसा
धार पर – 3

समय का पहिया

समय चलता ही रहता
न देखे सुबह न देखे शाम,
समय का पहिया चलता ही रहता।
शाश्वत, अविरल और अविराम
समय का पहिया चलता ही रहता।
सृष्टि का सृजन हुआ,
जीव का भी जन्म हुआ, उसके
जिम्मे कर्म हुआ, दिखा नया
परिणाम समय का पहिया
चलता ही रहता।
त्रेता से पहुंचे द्वापर में, द्वापर से
आये सतयुग में, आ गया अब
कलयुग भी, बीच में नहीं कोई विराम,
समय का पहिया चलता ही रहता।
पीत पात पतझड़ ले जाता,
वसन्त ऋतु नये पात ले आता,
सृष्टि को भूत से वर्तमान में लाता,
समय की शक्ति ही बलवान,
समय का पहिया चलता ही रहता।

कृष्ण मुरारी

वो प्रेम का भाव कहाॅ है अब
राधा संग जो प्रेम किया तुमने,
दो होकर भी जो एक बने
दो देह एक प्राण सिखाया तुमने,
बाॅसुरी की इस तान से
बिन बोले, सब बोल दिया तुमने,
क्या था कान्हा वो, प्रीत का रंग
पूरे ब्रजमण्डल में जो था घोला तुमने,
गाय, मोर, पक्षी और पेड़ भी थे
पूरी प्रकृति तुम्हारी थी प्रेमी
हर रचना तुम्हारी प्रीत में थी
हर रचना में तुम समाये थे
हे मुरलीधर, हे गोवर्धन
मेरे जगदीश्वर, तुम मनमोहन हो
द्वारकेश, बृजरसिया,
तुम बृजनन्दन, गोपाल, गोविन्द
तुम श्यामसलोने नारायण हरि के
रूप अनन्त लिए,
हर कण में प्रेमरंग बिखराओ
आओ वंशीधर, आज प्रेम रंग
उड़ गया धरा से,
बिखराओ रंग हे मुरलीधर
आओ धरा पर हे गोवर्धन।

नया सवेरा

पहली किरण धुली स्वर्णिम छटा,
नयी किरण और नया सवेरा।
पक्षियों का कलरव,
मन्दिरों का घण्टस्वर,
पावन बयार, मद्धिम फुहार,
बहती कलकल बन श्वेत धार
पक्षी चले छोड़ अपना बसेरा,
नयी किरण और नया सवेरा।
मोती मानिंद दिखें ओस की बूंद
कलियां सोती जैसे ऑखें मूद
ललिमा बढ़ी, कालिमां हटी
कलियॉ खिली और फूल बनीं

असलियत

तारामण्डल में तारे हजार
क्या एक भी तारा बन पाया
आज अंधेरा घिरा सब ओर
मैंने क्या खोया और क्या पाया।
जब दृष्टि नभ पर जाती है
असलियत समझ में आती है
क्या खोया और क्या पाया।
हम चाहते हैं ऊपर चढ़ना
बड़ी–बड़ी बातें करना
पर तारे हैं जो कभी बोले ही नहीं
भेद कभी खोले ही नहीं
दूजे को नीचा न दिखाते वो कभी
न दिल किसी का दुखाते वो कभी
पर जब देखूं इन इन्सानों को
सर्वश्रेष्ठ सन्तानों को
असलियत समझ में आती है
मैंने क्या खोया और क्या पाया।
जिस माली ने जन्म दिया
रंग, रूप, आकार दिया
पहचान दी और नाम दिया
आज उसी फूल ने, माली के कृतत्व
को झुठलाया।
असलियत समझ में आती है
क्या खोया और क्या पाया
इंसान रूप में जन्म लिया
प्रेम का पाठ पढ़ाया था
इंसान हुआ जब बेपर्दा
इंसानियत हो गयी नंगी
नंगे इंसानों से, अब क्या कहें हम
क्या कहकर उनको समझायें
आओ दिखलायें तारों को
जो बात बिन कहे समझ जायें
बुद्धिमान हैं तारे मानव से,
असलियत समझ में आती है
क्या खोया और क्या पाया।

जिन्दगी का दर्द

मैंने जिन्दगी को कई बार
हँसते हुए देखा है,
पर क्या सच में जिन्दगी हर बार हँसती है ?
लोग हँसते हैं कई बार हँसाने के लिए,
खुद तड़पते हैं, पर मुस्कुराते हैं, जमाने के लिए,
कहीं कोई ऑसू, किसी कोर से ढुलक ही जाता है,
छिपा हुआ दर्द, दिल का, बिना कुछ कहे
बयां कर जाता है,
हर दिल में हजारों ख्वाहिशें होती हैं
कुछ टूटती हैं, कुछ मुरझाती हैं, कुछ
पूरी होती है,
पुरसुकून जिन्दगी की हर शख्स को काशिश होती है,
पर दामन में तकलीफें, मजबूरियाँ घुटन में रोती हैं तनहाई।
कहते सब हैं, या कहूँ, जिन्दगी का फलसफा है यही,
जिन्दगी का दर्द सबका अपना है, किसी
को दिखाकर कम हो सकता नहीं,
अगर सीखना है तो सीखो उस जोकर से यारों,
कुछ जो सिखा सकता है,
उसमें वो कूवत है, जो रोते को हँसा सकता है
क्या आपने ये सोचा है, वो दिल से हँसता है या नहीं,
ये वो चारदीवारी है दुःख की,
जिसमें एक बेबस मजबूरियों में जा फँसता है।
सफेद पुते चेहरों के पीछे क्या सच है ?
काली सच्चाईयों के घूँट पीने
के लिए ये विवश है, ये कैसा
'बीभत्स अचरज' है।

कुम्हार का घड़ा

कच्ची माटी का घड़ा कुम्हार ने रचा,
जैसा चाहा, वैसा मोंड़ा, जितना चाहा,
उतना बड़ा, जैसा चाहा वैसा गढ़ा,
खूब पकांया और तपाया, बनाया
मजबूत घड़ा।
कुम्हार ने जो चाहा, वो रच दिया,
परिश्रम से मजबूत एक घड़ा बड़ी
लगन से बड़ी तपन से, धैर्य और
विश्वास से मजबूत घड़ा।
एक अनपढ़ कुम्हार ने, कर्म का पाठ पढ़ाया
आधुनिकतम समाज ने उसी धैर्य और
विश्वास को आज भुलाया,
आज पूर्ण विकसित होकर भी,
इक्कीसवीं सदी में रहकर भी,
जरूरत उसी कुम्हार की है,
कर्म, धैर्य, विश्वास जैसे अमूल्य गीता के
ज्ञान की हैं।

कृष्ण की लीला

बालरूप में माखनचोर
चोरी करते रहे माखन की,
हरते रहे सबके दुःख चहुँ ओर
कभी पूतनावध करके,
कभी किया कालियामर्दन,
कभी चीरहरण की रची कथा
कभी कहलाये तुम गोर्वधन।
जब युवाकाल में तुम आये
ब्रज में प्रेमरंग बिखराया
रास रचाया गोपियो संग
ब्रजरसिया कहलाये तुम
राधा संग ऐसी प्रीत रची
मुरली की ऐसी तान बँधी
गोपी झूमें, पक्षी झूमे
इतराये ब्रज की गली–2।
एक प्राण, दो देह भी तुम ही बने
जब कंस ने अनीति की सीमा पार करी,
तब नीति का साथ दिया तुमने।
जब अधर्म पैर पसार रहा,
तब धर्म का बिगुल फूंका तुमने।
'गीता उपदेश' अर्जुन को दिया,
सारथी बन धर्म निभाया तुमने।
गीता की राह अर्जुन को बता,
'कर्म' महत्ता का ज्ञान सिखाया तुमने।
हे नारायण कहाँ हो तुम ?
आओ, जैसे गोवर्धन उठाया
एक उंगली पर,
थाम लो गिरता प्रतिपल ये संसार,
आज जरूरत तुम्हारे ज्ञान की है
चक्र चला कर करो उद्धार।।

बस देवी रूप की पूजा होती है

बस देवी रूप की पूजा होती है,
कहते हैं देवी भी दुहिता को
कितनी जन्मदायी माँ खुश होती हैं
बस देवीरूप की पूजा होती है।
बचपन बीता संग गुड़ियों के
पलना ही था, तो पल ही गयी,
बेटी है, तू पराई है,
सुनना ही था, तो सुनती ही गयी,
नवरात्रि में जरा महत्व मिला,
देवी, कन्या का नाम मिला,
नवरात्रि गई, कन्या भी गुम,
किसकी पूजा फिर होती है
बस देवी रूप की पूजा होती है।
यौवन आया, जवान हुयी,
जन्मदाता के सिर पर बोझ बनी,
बेटी जैसे, शीतल छाँव जैसी
पर कितनों को सुख देती है।
बस देवी रूप की पूजा होती है।

आतंकवाद

गहन अंधकार है, चीख है पुकार है
यहॉ–वहॉ, जहॉ–तहॉ, छाया एक गुबार है
हर दिशा सहम–सहम, हर फिजां डरी–2
हर कहीं से उठते हुये, असंख्यों सवाल हैं।
मौत का जो मंजर है, खुद में ही ये मौत है,
कहीं कटा एक सिर पड़ा, कहीं पड़ा एक पैर भी,
खून वो जो है पड़ा, उसका रंग बदल गया
कहीं एक बालक है पड़ा, वहीं पड़ी थी माँ भी।
पहले जब भी लड़े कभी, दूसरों से लड़ते थे,
स्वाभिमान के लिए लड़ते थे, सम्मान के लिए लड़ते थे,
न अब स्वाभिमान है, न आत्मसम्मान है,
'इंसानियत' के मूल्यों का भी न अब रहा गुमान है।
क्या होगा अब भविष्य में ?
क्या देंगे अपनी अगली पीढ़ी को ?
विरासत में हमारे पास बचे हुये,
'आतंकवाद' और 'असंख्य सवालों' सवाल हैं ?

श्रीमती शिक्षा स्वामी सत्यमित्रानन्द महाविद्यालय रायबरेली के गृह विज्ञान विभाग में प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं। इनकी शिक्षा दीक्षा बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान से हुई है तथा इनकी साहित्यिक कृतियां नियमित रूप से प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।